International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(V), January - March, 2024, pp. 41-44

'घर' नारीजीवन के दर्द की कहानी

अकरम रहीमभाई डेरैया*
नीतिन भींगराडीया**

प्रस्तावना

किरीट दुधात का जन्म १/१/१९६१ को अमरेली जिले के मोटा अंकाडिया गांव में हुआ था। उन्होंने अपनी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा अपने मामा के घर में रहते हुए केरियाचाड गांव में की। उन्होंने अपनी उच्च माध्यमिक शिक्षा अहमदाबाद के गोमतीपुर में डेमोक्रेटिक हाईस्कूल में की। उन्होंने स्नातक और अनुस्नातक की शिक्षा अंग्रेजी साहित्य में की। पिता नरोडा में अशोक मिल में कर्मचारी थे। कालेज के दुसरे बर्ष की पढ़ाई के दौरान १९८० में गांधीनगर सचिवालय में क्लर्क के रूप में सरकारी सेवा में शामिल हुए। १९८९ में सीधी भर्ती के डेपुटी कलेक्टर के रूप में कार्य किया। अमरेली, अहमदाबाद गांधीनगर जामनगर नवसारी और कच्छ जैसे जिलों में काम करते हुए, कच्छ में ग्राम विकास, राजस्व और भूकंप के बाद पुनर्वास का काम करते हुए, २०१३ में अतिरिक्त कलेक्टर के रूप में स्वैच्छिक रूप से सेवानिवृत्त हुए। १९७८ से वे बुद्सभा में गए और कविता लिखने के असफल प्रयासों के बाद लघु कहानियाँ लिखीं। पहली कहानी १९८४ में सुमन शाह द्वारा संपादित शब्दसृष्टि में प्रकाशित हुई थी। आपका पहला कहानी संग्रह 'बापा की पीपर' १९९८ की साल में प्रगट हुआ था। आपका दूसरा कहानी संग्रह 'एसे थक जाना' २००८ में साहीत्य अकादमी द्वारा प्रकाशित प्रगट हुआ था। उन्होंने साहीत्य अकादमी द्वारा प्रकाशित 'घनश्याम देसाई की सर्वश्रेष्ठ कहानियों' का संपादन किया था। अधिकांश कहानियाँ भरत नायक द्वारा स्थापित 'गधपर्व' और 'साहचर्य' में छपी थी। भरत नायक और गीता नायक द्वारा संचालित साहचर्य लेखन शीबीर में नियमित प्रतिभागी रहे थे। सेवानिवृत्ति के बाद युवा कथाकारों के लिए कहानी लेखन शीबीरके रमेश आर. दवे के साथ सह–संपादन कीया था।और १९९७ से कमल वोरा और नौशील मेहता के साथ त्रैमासिक 'एतद्' का सह–संपादन कीया था। साहित्यिक गतिविधि के लिए उमाशंकर पुरस्कार, तख्तसिंहजी पुरस्कार, गुजराती साहित्य अकादमी और गुजराती माहित्य परिषद के श्रेष्ठ किताब का पुरस्कार और धूमकेतु परिवार के सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार और उनके कहानी संग्रह 'एसे थक जाना' के लिए गुर्जर प्रकाशन द्वारा प्रस्तुत धूमकेतु पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

साहित्य और समाज का अटूट संबंध है। दूसरे शब्दों में कहें तो साहित्य और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। प्राचीन काल से ही साहित्य और समाज का परस्पर संबंध देखा जा रहा है। जब शिष्ट साहित्य नहीं था तब भी सामाजिक दर्शन लोकसाहित्य के रूप में प्रचलित था। लोकसाहित्य से लेकर वर्तमान साहित्य तक में नारी जीवन एवं उसकी विभिन्न समस्याओं का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से चित्रण किया गया है।

* पीएच.डी. शोधकर्ता, गुजराती भाषा साहित्य भवन, महाराजा कृष्णकुमारसिंहजी भावनगर विश्वविधालय, गुजरात।
** मार्गदर्शक, लोकभारती विश्वविधालय, गुजरात।
# The paper was presented in the National Multidisciplinary Conference organised by Maharani Shree Nandkuverba Mahila College, Bhavnagar, Gujarat on 21st January, 2024.

लोकगीतों लोककथाओं से लेकर आज के नाटकों उपन्यासों कविताओं तक गुजराती साहित्यिक रूपों में महिलाओं के जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रगट कीया गया है। महिलाओं की पीड़ा दर्द इच्छाइ कमजोरी गुण और दोष आदि को विभिन्न साहित्यिक रूपों में दर्शाया गया है। साहित्य समाज को प्रतिबिंबित करता है। महिला समाज का एक अंग है। अत यह स्वाभाविक है कि उनके जीवन और जीवन की समस्याओं तथा अन्य प्रश्नों का साहित्य में प्रस्तुतीकरण हो। 'घर' नारी जीवन की समस्याओं को प्रभावित करने वाली कहानी है। कहानी के रचयिता ने एक अजीब स्थिति का प्रभावशाली वर्णन किया है। जो महिला के पूरे जीवन का प्रतिनिधित्व नही करती है बल्की एक छोटी सी कहानी के माध्यम से एक अजीबोगरीब पीड़ा प्रस्तुत करते हैं। यहां किरीट दुधात की घर नामक कहानी की समीक्षा करने का प्रयास किया गया है जो महिला जीवन को उजागर करती है।

गुजराती साहित्य में एक पुरुष रचनाकार द्वारा नारी जीवन की भावना को व्यक्त करने वाली लघु कथाएँ लिखी गई हैं। उनके कथक पुरुष ही होते हैं। लेकिन घर नामक कहानी में स्त्री स्वयं कथक बनकर अपनी कहानी प्रस्तुत करती है जो बहुत ही प्रतीकात्मक है। कथक के रूप में एक महिला के अपने पति के तदुपरांत दुसरे मर्दों के साथ यौन संबंध को यहां एक अलग मूड में प्रस्तुत किया गया है। नायिका अपने सपनों का घर बनाने के लिए पूरा घर दांव पर लगा देती है। समाज के अभिजात्य वर्ग का 'फुफ्फुसीय क्षय यहाँ प्रस्तुत है। मामी की बातें सुनने के बाद वह दस साल बड़े माराज से शादी कर लेती है। यह भ्रम गलत है कि नायिका माराज से शादी करके खुद को खुश कर लेगी।

माराज की हीरे की खींचतान के कारण व्यवसाय में मंदी नायिका को भ्रमित करने वाली स्थिति में डाल देती है। अपने पति को आर्थिक रूप से समर्थन देने के लिए एम.एस. ऑफिस निजी कंप्यूटर कक्षाएं लेकर सीखती है। जिला पंचायत के डाटा एन्ट्री कार्य में संलग्न यहां नरेशभाई का किरदार नायिका का शारीरिक शोषण करता है। कहानी में जब मैं कंप्यूटर चालू कर रही थी वह आया और धीरे से कमरे का दरवाजा बंद कर दिया और झुककर कहा बड़ी आयी कंप्यूटर की बेटी बनने ! मैं तेरे घर में कभी खाना ख़तम होने नही दूंगा। मैं जो कहता हूं वह करना शुरू करो। मैंने भागने की कोशिश की लेकिन उन्होंने मेरे कपड़े फाड़ दिए और बोले अभी जाओ नंगी होकर बाजार में घूमो। एक घंटे के बाद उन्होंने मुझे अपनी पत्नी के कपड़े पहनने दिए और मेरा हाथ मरोड़कर एक हजार रुपये दीए। (पृ.१५७) भद्र परिवार के सदस्यों द्वारा ऐसे कृत्य और माराज के द्वारा इस कृत्य का प्रतिकार नहीं किया जा सकता। माराज यह बातें सुनते बेहोश हो जाता है । पति की बीमारी और घर चलाने में आर्थिक दिक्कतें नायिका को सिर से पाँव तक झकझोर देती हैं। माराज की बीमारी के पीछे पूरा अतीत है। इसका कारण माराज के पिता का गुस्सैवाला स्वभाव है। इस तरह नरेशभाई नायिका के लिए पैसे कमाने का जरिया बन जाते हैं। नरेशभाई के अलग–अलग मर्दों से संपर्क भी नायिका के करवाता हैं। नरेशभाई नायिका के लिए ग्राहक ढूंढने का काम करते हैं। वह अपने कमीशन का भी दावा करते हैं जो प्रतीकात्मक है। यहां नरेशभाई की मर्दानगी दिखती है।

नरेशभाई माराज के लिए दलाल शब्द का प्रयोग करते हैं। उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णित किया गया है जो अपनी पत्नी के व्यभिचार पर निर्भर रहता है। जैसे ही नरेश भाई का नाम आया माराज के दीमाग की दोनों नसें फूलने लगी थीं।(पृ.१५४) महाराज की मिर्गी की बीमारी के कारण वे आर्थिक रूप से कोई काम नहीं कर पा रहे हैं। नायिका को घर बचाने के लिए नरेशभाई के पास जाकर खड़ा होना पड़ता है। माराज की कमजोरी नायिका को दूसरी बार नरेशभाई की राह पर ले जाती है। नरेश भाई से लेकर नेताजी और बिल्डर तक आगे बढ़ते है। नायिका पैसे पाने के लिए उसी राह पर चलने को मजबूर है ।

अनुसूया की नायिका को इंदिरा बाजार में सब्जी खरीदती हुई मिलती है। अनुसूया का किरदार नायिका और महाराज को एक करने वाला है। नायिका की शादी के बाद अनुसूयाबहन की पड़ोसी बनती है। पड़ोसीधर्म के कारण माराज और नायिका को घर में देखकर पड़ोसी भी चिंता जताते हैं जब समय आ रहा है तो घर में क्यों बैठे हो मेरे भाई(माराज) को काम नहीं मिलने की बात चल रही है और क्या सरकारी कर्मचारी के रीकोड में माराज नायिका के पति का रिकॉर्ड में किरायेदार के रूप में भी उल्लेख नहीं है। अनसूयाबहन इस विषय पर

अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए कहती है कोई राजनेता बकरी की गर्दन के थन जैसी योजना बनाता क्यों है? (पृ. १६०) तो माराज के वयस्क होने का पूरा कारण अतीत है। वह वास्तविकता बताती है उसकी भावी पत्नी। महाराज के पिता के गुस्सैवाला स्वभाव और बिना वजह उन्हें पीटने के डर से मिर्गी जैसी बीमारी आ गई। दस–बारह साल की उम्र में अपने पिता के आदेश से महाराज को शाम को सौ रुपये कमाने के लिए मजबूर होना पड़ता था। ये सब बातें महाराज की कमज़ोरी को दर्शाती हैं। महाराज को हीरों के आकर्षण और आय के लिए कोई दूसरा पेशा उपयुक्त नहीं लगता। माराज को अपनी खुशी के लिए एक घर की भी जरूरत है जिसे वह देने में सक्षम नहीं है। वित्तीय स्थिति की समस्या के कारण नायिका को एक महिला के रूप में शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है। उसका पति माराज उसे अलग–अलग पुरुषों से संपर्क कराता है। और पत्नी अपना जिस्म बेचती है।

माराज मिर्गी के पास क्यों आता है इसके पीछे पूरा अतीत है। वह माराज को अपनी भावी पत्नी की वास्तविकता बताता है। महाराज के पिता के गुस्सै स्वभाव और बिना वजह उन्हें पीटने के डर से मिर्गी जैसी बीमारी आ गई। दस–बारह साल की उम्र में अपने पिता के आदेश से महाराज को शाम को सौ रुपये कमाने के लिए मजबूर होना पड़ा। ये सब बातें महाराज की कमज़ोरी को दर्शाती हैं। माराज को अपनी खुशी के लिए एक घर की भी जरूरत है जिसे वह अपनी पत्नी को देने में सक्षम नहीं है। वित्तीय स्थिति की समस्या के कारण नायिका को एक महिला के रूप में शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है। उसका पति माराज उसे अलग–अलग पुरुषों से संपर्क कराता है। और पत्नी अपना जिस्म बेचती है। अपना शरीर बेचने वाली इस महिला को एक घर का ख्याल आता है। यह घर भी उसके लिए शारीरिक रूप से नहीं बल्कि मानसिक स्तर पर रहता है। नायिका का पति रोज टिफिन लेकर बाहर चला जाता हैं। नायिका अभी भी घर के सपने देखती है। यह एक वक्रता है। आर्थिक स्थिति केवल शारीरिक शोषण तक ही सीमित नहीं है बल्कि मानसिक शोषण भी करती है। यह एक महिला के जीवन की त्रासदी है। कहानी के अंत में भी नायिका की किसी पुरुष से सगाई नहीं हुई है और महाराज और नायिका दोनों सेक्स करते हैं। माराज ऐसा लगता है जैसे मैं बाहरी दुनिया में नहीं रहना चाहता। माराज जहां से आया हूं वहां वापस जाने की असहनीय इच्छा होती है। यह करुणा का दर्शन है। कहानी के अंत में नायिका अपने घर की छत देखती हे बिस्तर पर लेटी हुई अपनी आंसुओं से भीगी आँखों को पोंछकर मकड़ी के दस्त से बचाने का दयनीय प्रयास करती है और इस तरह अपने सपने का घर बचाने के हेतु अपनी आँखें बंद कर लेती है।

परिवार और समाज में एक महिला का बचाए जाने वाला स्थान मौलिक और अद्वितीय है। वह माँ और बहन के रूप में वात्सल्य की मूर्ति बन जाती है। एक पत्नी अपने पति की सच्ची साथी बनती है। नारीत्व के और भी रूप हैं जो समाज को प्रगति के पथ पर ले जाते हैं। हालाँकि यह हमारे लिए खेद की बात है कि इतने महान योगदान के बाद भी वैदिककाल की महिलाओं को छोड़कर बाकी सभी महिलाओं की स्थिति खराब हुई है। सदियों से देखा गया है कि हम एक बेकाबू 'शक्तिशाली' महिला को देवी का नाम देकर उसे शक्तिहीन बना देते हैं। अतः जिस स्त्री को वश में किया जा सके वह दासी है। कोई भी स्थिति महिला को इंसान बने रहने की इजाजत नहीं देती। गुलाम औरत को पुरुष के दिल की साम्राज्ञी के रूप में प्रतिष्ठित करने और अपना काम करने की आदत हमें विरासत में मिली है। एक महिला कमजोर पैदा नहीं होती थी लेकिन पुरुषप्रधान समाज द्वारा उसके लिए बनाए गए आदर्शों और मानदंडों ने उसे कमजोर बना दिया है। उसके चारों ओर आदर्शों का ऐसा जाल बुना गया और उसके चारों ओर एक सांस्कृतिक संरचना तैयार की गई कि महिला खुशी–खुशी उसमें फंस गई। उसके लिए भावुक निःस्वार्थ दास और शर्मीली रूढ़ियाँ तैयार की गईं। महिला अनजाने में उसमें फिसल गई जैसे कि वह अपनी मर्जी से हो। तथ्य यह है कि एक महिला का अपना व्यक्तित्व अपनी प्रजनन संबंधी इच्छाएं यहां तक कि निर्णय लेने की शक्ति भी ले नहीं सकती है जिसे हमेशा नजर अंदाज किया गया है वह प्रजनन का एक साधन बन गई है बिना मौद्रिक मुआवजे के एक समर्पित दासी बन गई है।

क्या आंखों पर पट्टी बांधकर शादीशुदा जिंदगी और ऑफिस लाइफ जीनेवाली महिलाओं की अन्याय सहने की क्षमता खत्म हो गई है आंखें खोलकर जीना उनके लिए किसी महायुध्ध से कम नहीं है. नारी का अस्तित्व उतना ही प्राचीन है जितना पुरुष का। महिलाओं को भी पुरुषों की तरह युध्ध पलायन सूखा बाढ़ अवसाद जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा बच्चे को जन्म देने का दर्द भी साथ में आया है। उसके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण समय मासिक धर्म और गर्भधारण की पीड़ा और समस्याओं से गुज़रते हुए बीते। बच्चे का पालन–पोषण गर्भपात शिशुमृत्यु आदि से शारीरिक और मानसिक कष्ट होता है। अतः यह किसी महान युध्ध से कमतर नहीं है। नारी का अस्तित्व उतना ही प्राचीन है जितना पुरुष का। महिलाओं को भी पुरुषों की तरह युध्ध पलायन सूखा बाढ़ अवसाद जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके सामने मनुष्य को कभी घर से नहीं बांधा गया। वह जो भी करना चाहता था उसे करने के लिए वह हमेशा स्वतंत्र रहा है। एक आदमी राजा रचनाकार चित्रकार या आलोचक हो सकता है। चाहे कोई महिला मां हो पत्नी हो बेटी हो दोस्त हो या रखैल हो हाल के दिनों तक वेश्यावृत्ति ही एक महिला के लिए अपने पैरों पर खड़े होने का एकमात्र तरीका बन गया था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. घर (संपूर्ण कहानियाँ) : किरीट दुधात
2. शतरूपा : संपादित करें शरीफा विजलीवाला

❖◆❖